Quadrant II – Transcript and Related Materials

Programme: Bachelor of Arts (F.Y.B.A)

Subject: Hindi

Paper Code: HNG 102

Paper Title: 'हिंदी साहित्य का परिचय II'

Unit: Unit 1

Module Name: अदम गोंडवी द्वारा रचित कविता 'जिस्म क्या है रूह तक'

Module No: 03

Name of the Presenter: Mr. Salim Mohamed Gaded

अदम गोंडवी का संक्षिप्त परिचय

हिंदी के सदाबहार गजलकार अदम गोंडवी का जन्म 22 अक्तूबर 1947 में आता ग्राम, परसपुर, गोंडा (उत्तर प्रदेश) में हुआ । उनका मूल मान रामनाथ सिंह था । एक गरीब किसान परिवार में जन्में अदम गोंडवी को बचपन से ही कई समस्याओं का सामना करना पड़ा । इन्हें दुष्यंत कुमार के परंपरा को आगे बढ़ाने वाला कवि भी कहा जाता है ।

अदम गोंडवी को कबीर परंपरा का कवि भी कहा जाता है । जिन सामाजिक कुकर्मों को सुधारने का कार्य कबीर ने मध्यकाल में किया था वही कार्य अदम गोंडवी आधुनिक भारत में किया है । उन्होंने साहित्य को प्रसिद्धि का दूसरा पर्याय नहीं माना , बल्कि कलाम का उतना ही प्रयोग किया जितना ज़रूरी था । गोंडवी जी की कविता

सामाजिक टिप्पणी के लिए जानी जाती है, जो भ्रष्ट राजनेताओं और प्रकृति में क्रांतिकारी विचारों के प्रति घृणा करती है । वे लोकतंत्र के बेनाम राजनेताओं की दोगली नीति का खंडन कर उनका भांडा फोड़ते हुये नज़र आते हैं । वे कहते हैं कि -

देखना सुनना व सच कहना जिन्हें भाता नहीं ।
कुर्सियों पर फिर वही बापू के बंदर आ गए ।

कल तलाक जो हाशिए पर भी न आते थे नज़र
आजकल बाज़ार में उनके कलंडर आ गए ।

उन्होंने अपने गवई अंदाज़ में महानगरीय चकाचौंध को अपनी कविता से नेस्तनाबूद किया । उनके आक्रामकता और सामान्य जनता की पीड़ा से भरी कविता में व्यंग्यात्मकता है । उनकी शायरी में आवाम बसता है , उनकी गजले जनता में न वाह-वाही को बटोरती है न आह परोसती है , बल्कि सीधे दिलों में बस जाती है । ऐसे महान फनकार की मृत्यु 18 दिसंबर 2011 को पेट के रोगों के कारण, आयुर्विज्ञान संजय गांधी स्नातकोत्तर संस्थान, लखनऊ में हो गई ।

उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं कविता संग्रह : धरती की सतह पर, समय से मुठभेड़, गर्म रोटी की महक ।

पुरस्कार :

दुष्यंत कुमार पुरस्कार (मध्य प्रदेश सरकार, 1998),

अदम गोंडवी के गज़लों का मूल्यांकन

1) अदम गोंडवी इस गजल के माध्यम से पाठकों का ध्यान सामाजिक समस्याओं की ओर आकर्षित करते हैं । दरअसल समाज में जो दिखता है वह अंतिम सत्य नहीं होता, कई चीज़ें छिपी रहती है या छिपाई जाती है ; क्योंकि उन खामियों का खुलासा होने पर सीधे सत्ता पर बंदूक तन सकती है । इस विध्वंस से बचाने के लिए सामान्य जनता को केवल अपने अच्छाइयों से परिचित करवाया जाता है । किन्तु जनवादी कवि अदम गोंडवी इन सत्तलोलूप और दोगलेपब को खत्म करना चाहते हैं । यह पंक्ति केवल सत्ता में बैठे हुकमरानों तक सीमित नहीं है बल्कि हर उन लोगों के लिए हाँ जो अपने पद का गलत इस्तेमाल कर जनता को ठगते हैं । इसमें सामाजिक समस्याएँ जैसे भूखमरी, भ्रष्टाचार, स्त्रियों की समस्या, बेरोजगारी, भाई-भतीजावाद आदि का समावेश है । इन सामाजिक बुराइयों को खत्म करने के बजाए इन्हें बस छिपा कर उन चीजों को सामने लाया जा रहा है जिससे जनता की भावनाओं को ठेस पहुंचाया जा सके और जनता भी उनकी बातों में आकर मूल समस्या को भूल उनकी तथा कथित भावनाओं में बह जाए । इसीलिए कवि इन पंक्तियों के माध्यम से समस्या जनता को इस

भीड़ में शामिल होने की बात कर रहे हैं जिसे झूठा करार कर दिया गया है, जिसे राष्ट्र विरोधी कहा गया है । ताकि जनता उसकी बातों में छिपे सच को न पहचान सके । कवि जनता को इस अनछुए सत्य से जनता का साक्षात्कार करवाना चहते हैं ।

2) कवि इन पंक्तियों के माध्यम से युवा पीढ़ी के बीच फैली निराशा को चित्रित करते हैं । युवा वर्ग देश के विकास का द्योतक है पर बदलते समाज, जनसंख्या में बढ़ोतरी और कुछ अनैतिक राजनीतिक दाव-पेज के कारण इन्हें गहरी मार पड़ी है । समाज जिस तेजी से बदल रहा है इसी तेजी से युवा वर्ग जीवन में हताशा और निराशा के चंगुल में फँसता जा रही है । कारण कि सुशिक्षित युवा को आज भी बेरोजगारी का सामना करना पड़ रहा है । पी. एच. डी किए हुए युवा भी आज चपरासी की नौकरी करने पर बाध्य है । दूसरी ओर इस समस्या का कारण जनसंख्या भी है, जिससे नौकरियों में गिरावट नज़र आ रही है । इसके उपाय ढूँढने वालों ने निराकरण के बजाए राजनीतिक फायदे उठाकर युवा शक्ति का गलत प्रयोग किया है । ऐसा नहीं है कि विरोध नहीं हुआ है , या जनता हाथ पर हाथ धरे बैठी है । विरोध बेशक हुआ है पर जिस तरह शाहजहाँ के संदर्भ में यह किंवदंती रही है कि ताजमहल के निर्माण के बाद सभी कारीगर के हाथ कटवाने का फरमान निकाला गया था उसी तरह आज वह किंवदंती सच होती हुई नज़र आ रही है । युवाओं के आवाज़ को दबाने का प्रयत्न किया जा रहा है । फर्जी दफाओं और नजरबंद रख वे अपनी छाती की चौड़ाई नाप रहे हैं और अपनी पीठ खुद ही थपथपा रहें हैं । दूसरी ओर विरोध

में आ रहे हर आवाज़ को खरीदा जा रहा है । जिससे सवाल खड़े करने वालों की कमी देखी जा सकती है । इन सबके चलते युवा अंदर ही अंदर घुटता चला जा रहा है । अगर एक खड़ा भी हो जाए तो उसपर हज़ार सवाल खड़े कर देते हैं । इसीलिए धूमिल भी कहते हैं कि “अकेला कवि कटघरा होता है ।” जिसे सवालों में उलझकर अस्तित्वहीन बनाने की साजिश रची जा रही है । इसीलिए कवि कहते हैं कि युवा पीढ़ी के चेहरे पर हताशा छाई हुयी है । यदि इसे बदलना है तो युवाओं के सवालों को सुनने होगा। तब कहीं समाज को बदलने की कल्पना कर सकते हैं ।

3) कविता सच्चाई को बयान करती है । साहित्य समाज की झांकी है, वह सामाजिक बदलाव में अहम भूमिका निभाता रहा है । उसमें हर समस्याओं का केवल चित्रण मात्र नहीं होता बल्कि उन्हें खत्म करने के भी उपाय निहित होते हैं । साहित्य की कविता विधा को इस परिवर्तन का सबसे सशक्त माध्यम माना गया है । पर बीते कुछ दशकों से कविता का स्वरूप बदलता हुआ नज़र आ रहा है । जो मूलभूत स्थितियों के विपरीत जनता को कल्पना में विचरण कराने तक सीमित रह गया है । इस समस्या का जिक्र मुक्तिबोध भी अपनी कविता ‘मीठा बेर’ और ‘एक फोड़ा दुखा’ के माध्यम से करते हैं । आज गिने चुने साहित्यकार है और उनका साहित्य है जो साहित्य के माध्यम से समाज बदलने की अपेक्षा रखते हैं। कविता की बात करें तो आज प्रेम के कई रूप कविता में देखने को मिलेंगे । पर सच्चाई का जिक्र केवल नाम मात्र के लिए होता है । आज कविता में चाटुकारिता का भी समावेश बढ़ गया है जिससे कविता की भाषा बदल गयी है । आज मुक्तिबोध , धूमिल ,

नागार्जुन जैसे कवि की विरासत नगण्य है । कविता में अश्लील प्रवृत्तियों का भी समावेश बढ़ रहा है जिससे कविता का पाठक भी कम होते जा रहे हैं। मूल चिंता साहित्य से विमुख होने वालों की संख्या से है जो पहले कभी सच्चा पाठक हुआ करता था । पर कविता के बदलते मिजाज ने उसे दूर कर दिया । आज सच्चाई बस किंचित मात्र है । कुछ लोगों ने तो साहित्य को देश की शांति भंग करने का साधन भी मान लिया है । आज कविता चपलता और चापलूसी की धरोहर है जो अपना गिज़ा वसूल कर रही है । इन पंक्तियों के माध्यम से कवि बदलते साहित्य की मूल्यहीन प्रवृत्ति की ओर ध्यान आकर्षित करते हुये साहित्यिक महत्ता और उसके उद्देश्य को समझते हुये नज़र आते हैं ।

4) राजनीतिक, सामाजिक और साहित्यिक समस्याओं के साथ स्त्रियों की स्थिति पर भी कवि अपनी चिंता व्यक्त करते हैं । स्त्रियाँ हर वक़्त आसानी से शिकार बनाई जाती रही है । उसका अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व तो जैसे है ही नहीं । हर कार्य के लिए उसे अबला साबित किया गया है । समाज भी उनकी पहचान पुरुषों से जोड़ते हुये करता रहा है । जिसके वजह से आज भी वह बंधन में बंधी हुई है । विद्रोह करने की हर शक्ति से उसे वंचित रखा गया है । कवि आज की स्त्रियों की स्थिति बताने के लिए पौराणिक आख्यान से उदाहरण देते हुये नज़र आते हैं । मतस्यगंधा जो एक मत्स्य से उत्पन्न कन्या थी (जो कालांतर में सत्यवती नाम से प्रचलित हुई जिसके पति शांतनु थे) जिसे पारासारा ऋषि के कुदृष्टि का बेमन से करना पड़ा था । ऋषि पारासारा ने मतस्यगंधा की कमियों को भाँपकर उसके मत्स्य गंध को मिटाने के

नाम पर उसे अपना शिकार बनाया था । आज भी स्त्रियाँ ऐसे कुदृष्टि और दूषित मनोवृत्ति वाले लोगों के झांसे में फंस जाती है । जिससे उनका पूरा जीवन बर्बाद हो जाता है । नारी को देवी का रूप माना जाता है और सोशल मीडिया पर इनकी पूजा भी की जाती है । सभी आदर देते हुये नज़र आते हैं । पर व्यावहारिक धरातल पर इन्हें हज़ार साल बाद भी अबला भी माना जाता रहा है और अपने फायदे इनका उपभोग किया जाता रहा है । सिर्फ पुरुष ही नहीं स्त्रियाँ भी दूसरी स्त्रियों को हानि पहुँचने में पीछे नहीं है । कई ऐसी स्त्रियों से संबन्धित घटनाएँ हैं जिसका मुख्य करण स्त्रियाँ ही रही हैं । इस स्थिति को सुधारने और महिलाओं साथ जुड़े अबला शब्द को हटाने के लिए स्त्री और पुरुष दोनों को अपने विचार बदलने होंगे । तभी ये कुहासा हट सकता है ।